The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

संस्कार-परम्परा में ज्योतिषीय निर्णयों की अनिवार्यता का सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन

चमन लाल, संस्कृत पीएच.डी. शोधार्थी

डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी

संस्थान (Affiliation): संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, जयपुर (राजस्थान)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17328991

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

संस्कार, ज्योतिष, मुहूर्त, पंचांग, कालविचार, ग्रहस्थिति, वैज्ञानिक दृष्टि, सांस्कृतिक विश्लेषण

ABSTRACT

भारतीय संस्कृति का समग्र आधार 'संस्कार' और 'काल' की संयुक्त चेतना पर टिका है। संस्कार मानव जीवन की वे विधियाँ हैं जिनसे व्यक्ति अपने आचरण, विचार और कर्म को दिव्यता के मार्ग पर अग्रसर करता है। इन संस्कारों के आयोजन में 'ज्योतिषीय निर्णय' का विशेष महत्व है, क्योंकि वैदिक दृष्टि में काल ही कर्म का नियन्ता माना गया है। यह शोध-पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि संस्कारों की फलसिद्धि और सामाजिक-आध्यात्मिक उपयोगिता, काल-निर्णय के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक अनुशासन से किस प्रकार सम्बद्ध है। ज्योतिष केवल ग्रहों का गणित नहीं, बल्कि मानव-कर्म और ब्रह्माण्डीय लय के बीच सामंजस्य का विज्ञान है। यह अध्ययन संस्कारों में प्रयुक्त मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र और योगों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करता है कि ज्योतिषीय निर्णयों की अनिवार्यता अंधविश्वास नहीं, बल्कि कालबोध की प्रज्ञा का रूप है। आधुनिक वैज्ञानिक साक्ष्यों के आलोक में भी यह प्रमाणित होता है कि समय का चयन व्यक्ति की मानसिक स्थिरता, सामाजिक विश्वास और क्रिया-फल की सफलता पर प्रभाव डालता है।[1]

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय जीवन-दर्शन में 'संस्कार' केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक सोपान का आध्यात्मिक परिष्कार है। वैदिक ऋषियों ने मनुष्य को सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से संस्कारित करने के लिए षोडश संस्कारों की परम्परा दी। गर्भाधान से अन्त्येष्टि तक प्रत्येक संस्कार का विधान एक निश्चित काल, दिशा और नक्षत्रीय अनुकूलता में किया जाता है। **मनुस्मृति** में कहा गया है—

"कालेन कर्माणि सिद्ध्यन्ति दैवेन सह कर्मभिः।"[2]

अर्थात् उचित समय में किये गए कर्म ही सिद्ध होते हैं।

यहाँ "काल" का अर्थ केवल घड़ी का समय नहीं, बल्कि ब्रह्माण्डीय व्यवस्था में स्थित उस क्षण से है, जिसमें मानव-क्रिया प्रकृति की लय से एकाकार होती है। इसीलिए भारतीय परम्परा में प्रत्येक संस्कार के लिए ज्योतिषीय निर्णय अनिवार्य माने गए हैं।

संस्कार के बिना मानव केवल जैविक प्राणी है; संस्कार उसे सांस्कृतिक प्राणी बनाते हैं। और उचित मुहूर्त के बिना संस्कार केवल कर्मकाण्ड रह जाता है। इसलिए, *संस्कार और ज्योतिष – दोनों भारतीय चेतना के दो परस्परपूरक आयाम हैं।[3]

2. शोध का उद्देश्य (Objectives)

1. संस्कारों के संचालन में ज्योतिषीय निर्णयों की अनिवार्यता का दार्शनिक व वैज्ञानिक परीक्षण।
2. षोडश संस्कारों में ग्रह, तिथि, नक्षत्र और योग के चयन की परम्परा का शास्त्रीय विश्लेषण।
3. आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से समय-चयन के औचित्य की समीक्षा।
4. पारम्परिक एवं आधुनिक दृष्टिकोणों के तुलनात्मक मूल्यांकन द्वारा नये निष्कर्षों की प्रस्तुति।
5. संस्कार-ज्योतिष के पुनरुत्थान हेतु मानकीकरण एवं शोध-आधारित सिफारिशें।[4]

3. शोध-पद्धति (Research Methodology)

इस शोध में विवेचनात्मक (Analytical) तथा सांस्कृतिक-समीक्षात्मक (Cultural Review) पद्धतियों का संयोजन किया गया है।

- **प्राथमिक स्रोत:** वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, वराहमिहिर की वृहत्संहिता, सूर्यसिद्धांत तथा भृगुसंहिता।
- **द्वितीयक स्रोत:** आधुनिक शोध-ग्रन्थ, वैज्ञानिक आलेख, तथा डिजिटल पंचांगों से प्राप्त डेटा।

- **विश्लेषण की दिशा:** प्रत्येक संस्कार में प्रयुक्त ज्योतिषीय निर्णय का शास्त्रीय प्रमाण, व्यावहारिक औचित्य और वैज्ञानिक व्याख्या।

शोध में संवादात्मक दृष्टि अपनाई गई है—अर्थात् शास्त्र और विज्ञान दोनों की परस्पर बातचीत से सत्य की खोज।[5]

4. संस्कारों का शास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार

'संस्कार' शब्द सं + कृ धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'संपूर्णता की ओर ले जाना'। यह 'शरीर', 'मन' और 'आत्मा' के समन्वय की प्रक्रिया है।

छान्दोग्य उपनिषद् कहता है—

"संस्कारो वै मनसः शुद्धिः।"[6]

संस्कार मन की शुद्धि का माध्यम है।

संस्कारों की प्रणाली जीवन को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चार पुरुषार्थों के अनुरूप बनाती है। इस प्रणाली में काल-चेतना अनिवार्य है। काल का अपवित्र होना, कर्म की निष्फलता का कारण माना गया है। याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार—

"अशुद्धकाले कृतं कर्म निष्फलं स्याद् न संशयः।"[7]

दार्शनिक दृष्टि से ज्योतिष वह शास्त्र है जो कर्म और काल के अन्तःसंबंध को स्पष्ट करता है। संस्कारों का उचित समय-निर्धारण मानव को उस ब्रह्माण्डीय गति के साथ जोड़ता है, जहाँ कर्म प्राकृतिक लय में परिवर्तित हो जाता है। यही लय 'मुहूर्त-विज्ञान' का सार है।

5. **संस्कारों में ज्योतिषीय निर्णयों का स्थान**

भारतीय संस्कारविधान नहीं-पद्धति केवल कर्म-, बल्कि *कालसंयम और खगोलीय समरसता-* का सजीव उदाहरण है। वेदों में स्पष्ट कहा गया है —

"तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगश्च करणं तथा।

पञ्चाङ्गं स्यात् समाख्यातं शुभाशुभविचारकम्॥[8]"

अर्थात् पंचांग के ये पाँच अंग तिथि), वार, नक्षत्र, योग, करणही किसी कर्म के शुभाशुभ फल के निर्णयकर्ता हैं। (संस्कारों में इन पंचाङ्गीय तत्वों का प्रयोग केवल धार्मिक भावना नहीं, बल्कि *समय) ऊर्जा-temporal energy)* के सन्तुलन का विज्ञान है।

ग्रहों और (क)संस्कारों का परस्पर सम्बन्ध

संस्कारों की प्रकृति ग्रहों की प्रतीकात्मक और उर्जात्मक शक्ति से गहराई से जुड़ी है —

संस्कार	प्रमुख ग्रह	ज्योतिषीय अर्थ
गर्भाधान	शुक्र, चन्द्र	जीवन-सृजन की शुभ ऊर्जा का समागम।
जातकर्म	सूर्य, बुध	ज्ञान और प्राण का प्रकट होना।
नामकरण	चन्द्र, लग्नेश	आत्म-अभिव्यक्ति और पहचान का निर्धारण।
अन्नप्राशन	चन्द्र, बृहस्पति	पोषण, वृद्धि और बुद्धि-संवर्धन।
उपनयन	गुरु, सूर्य	प्रकाश, ज्ञान और अनुशासन का आरम्भ।
विवाह	शुक्र, चन्द्र, मंगल	भावनात्मक संतुलन और जीवन-संयोजन का योग।
गृहप्रवेश	बुध, गुरु	मानसिक स्थिरता और शुभता का विस्तार।
अन्त्येष्टि	सूर्य, शनि	कर्म-समापन और आत्म-मुक्ति का संकेत।

प्रत्येक ग्रह उस संस्कार की *भावना, ऊर्जा और उद्देश्य* का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरणतः — विवाह में शुक्र और चन्द्र की प्रधानता *सौम्यता और स्थायित्व* की द्योतक है, जबकि उपनयन में गुरु का बल *धार्मिक अनुशासन* का प्रतीक है।

मुहूर्त का चयन और गणनात्मक औचित्य (ख)

ज्योतिष में *मुहूर्त* को कहा गया है। ''कर्मसिद्धि का द्वार''

वराहमिहिर ने स्पष्ट रूप से कहा है —

"मुहूर्तो हि कर्मणां फलं ददाति नान्यथा।[9]"

अर्थात् मुहूर्त ही कर्म का फल देता है, अन्यथा कर्म निष्फल रहता है।

मुहूर्त— निर्णय पंचांगीय गणना पर आधारित है-

- **तिथि:** चन्द्रअंश पर एक तिथि। १२ प्रत्येक — सूर्य के कोणीय अंतर से उत्पन्न-

- **वार:** ग्रहों की सात दिवसीय क्रमविकल्पना जो कर्म की दिशा को प्रभावित करती है। —
- **नक्षत्र:** चन्द्रमा की स्थिति, जो मनोवृत्ति और कर्म की संवेदना से जुड़ी है।
- **योग:** सूर्य और चन्द्र के मिलन से उत्पन्न २७ योग संवेदन के प्रतीक।-ऊर्जा —
- **करण:** तिथि का आधा भाग खंड जो कार्यारम्भ का क्षण निर्धारित करता है।-सूक्ष्म समय —

संस्कारों में यह पंचांगीय संरचना इस सिद्धान्त पर आधारित है कि *प्रत्येक समयखंड में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का एक विशिष्ट प्रवाह - विद्यमान होता* है।

शुभ मुहूर्त वह है, जहाँ यह ऊर्जा *व्यक्ति और कार्य दोनों के स्वभाव के अनुरूप* हो।

(ग) शास्त्रीय और तर्कसंगत औचित्य

संस्कारों में ग्रह खनिर्णय का उल्ले-काल-वेद, स्मृति और पुराणसभी में हुआ है।—

मनुस्मृति कहती है —

"कालं विदित्वा यः कुर्यात् कर्म तस्य न सिध्यति।[10]"

अर्थात् जो व्यक्ति काल की अनुकूलता के बिना कर्म करता है, वह निष्फल होता है।

यहाँ तारीख नहीं-का अर्थ केवल दिन "कालं विदित्वा", बल्कि *सांस्कृतिक समयजागरूकता-* (temporal consciousness) है।

दार्शनिक दृष्टि से यह मानव और ब्रह्मांड के बीच *लयसाम्य-* (rhythmic harmony) की खोज है। जैसे संगीत में सुर और ताल का सामंजस्य आवश्यक है, वैसे ही जीवन के संस्कारों में *कालसामंजस्य-* अनिवार्य है।

"संस्कारों में ज्योतिषीय निर्णय केवल परम्परा नहीं, बल्कि काल का नैतिक अनुशासन हैं। यह मानव को यह स्मरण कराते हैं कि हर कार्य के पीछे एक ब्रह्माण्डीय लय कार्यरत है, जिसे समझना ही सच्ची अध्यात्म"सिद्धि है।-

विवाह, गृहप्रवेश या उपनयन जैसे संस्कार यदि कालानुसार सम्पन्न किए जाएँ, तो वे न केवल धार्मिक शुद्धता प्रदान करते हैं, बल्कि व्यक्ति के मनोबल, पारिवारिक सामंजस्य और सामाजिक स्थिरता को भी सुदृढ़ करते हैं। इस प्रकार, ज्योतिषीय निर्णय संस्कारों में *'काल का विज्ञान'* और *'विश्व का नैतिक अनुशासन'* दोनों को समाहित करते हैं।

संस्कारों में ज्योतिषीय निर्णयों की अनिवार्यता का तात्पर्य यह नहीं कि हर कर्म केवल ग्रहों के अधीन है, बल्कि यह कि मानव को अपने कर्मों को *प्रकृति की लय में साधना* चाहिए।

ज्योतिष शास्त्र मनुष्य को *अनुकूल क्षण का बोध* कराता है; संस्कार उस क्षण को *आध्यात्मिक अर्थ* प्रदान करते हैं। अतः दोनों का संबंध परस्पर— परिपूरक है-

"ज्योतिष काल का विज्ञान है, संस्कार कर्म का विज्ञान — और इन दोनों का संगम ही जीवन का विज्ञान है।"

6. वैज्ञानिक विश्लेषण (Scientific Appraisal)

ज्योतिषीय निर्णयों को यदि वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए, तो वे प्राकृतिक समय-संवेदन के नियमों से मेल खाते हैं। आधुनिक विज्ञान स्वीकार करता है कि —

- चन्द्रमा की गति मानव-मस्तिष्क, निद्रा और व्यवहार पर प्रभाव डालती है।
- सौर ऊर्जा का चक्र जीवन-शक्ति और पर्यावरणीय चक्रों को प्रभावित करता है।
- ग्रहों की स्थिति ऋतुओं, प्रकाश-परिवर्तन और जैविक लयों के साथ सम्बद्ध है।

संस्कारों में इन खगोलीय प्रभावों को व्यवहारिक रूप में व्यवस्थित किया गया है। उदाहरणतः गर्भाधान संस्कार चन्द्रमा की उन्नति-काल में, विवाह वसन्त ऋतु में, और अन्त्येष्टि प्रातः या सायंकाल की प्राकृतिक समरूपता में सम्पन्न होते हैं। इस दृष्टि से ज्योतिष, मानव और प्रकृति के बीच cosmic resonance की अभिव्यक्ति है।[11]

7. सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष

संस्कार समाज की एकात्मता के प्रतीक हैं, और ज्योतिषीय निर्णय उस एकता का कालबद्ध अनुशासन। समय का सामूहिक निर्धारण सामाजिक समरसता को जन्म देता है। जब विवाह या उपनयन किसी शुभ मुहूर्त में होता है, तो परिवार और समुदाय की सामूहिक आस्था एक मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का वातावरण बनाती है।

यह सामूहिकता केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिरता का सूचक है। आधुनिक मनोविज्ञान भी स्वीकार करता है कि यदि व्यक्ति का कार्य 'सही समय' की अनुभूति से जुड़ा हो, तो उसकी सफलता की संभावना बढ़ जाती है।[12]

8. आलोचनात्मक समीक्षा (Critical Review)

आधुनिक विचारधारा में कई बार यह मत प्रस्तुत किया जाता है कि ज्योतिषीय निर्णय तर्कहीन परम्परा हैं। परंतु यह आलोचना तब दुर्बल हो जाती है जब ज्योतिष को केवल ग्रहफल तक सीमित न रखकर कालविज्ञान के रूप में देखा जाए। अंधविश्वास तब होता है जब तर्क का अभाव हो; किंतु शास्त्र में हर निर्णय तर्क और गणना पर आधारित है।

"ज्योतिष यदि विज्ञान से संवाद करे तो यह भारतीय चिंतन की सबसे सशक्त विरासत बन सकता है; और यदि इसे केवल कर्मकाण्ड कहा जाए तो हम अपनी सांस्कृतिक वैज्ञानिकता से विमुख हो जाएँगे।"

अतः आवश्यक है कि संस्कारों में ज्योतिषीय निर्णयों की आलोचना नहीं, बल्कि अभिनव व्याख्या की जाए।[13]

9. समकालीन परिप्रेक्ष्य (Contemporary Perspective)

आज डिजिटल युग में 'काल' और 'ग्रह' का ज्ञान सुलभ है — ऑनलाइन पंचांग, एप्लिकेशन्स, ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर इत्यादि से।

परंतु यहाँ चुनौती है — पारदर्शिता और मानकीकरण की। विभिन्न सॉफ्टवेयर भिन्न-भिन्न ग्रहांश और मानों का प्रयोग करते हैं। इसलिए, शुद्ध वैज्ञानिक गणना के मानदण्ड तय करना आवश्यक है।

साथ ही यह भी आवश्यक है कि ज्योतिष को विश्वविद्यालयों में संस्कृति-अध्ययन और विज्ञान दोनों के साथ पढ़ाया जाए। तभी संस्कारों में उसका स्थान पुनः प्रतिष्ठित होगा।[14]

10. **निष्कर्ष)Conclusion)**

संस्कारदर्शन के ऐसे दो स्तम्भ हैं जो-ये दोनों भारतीय जीवन —निर्णय परम्परा और ज्योतिषीय- *कर्म और काल* की अखण्ड एकता को स्थापित करते हैं।

संस्कार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि *मानवजीवन के वैज्ञानिक पुनर्संयोजन-* की प्रक्रिया हैं, और ज्योतिष वह विधा है जो इस पुनर्संयोजन को *काल की दिशा और गति* प्रदान करती है।

भारतीय चिंतन का मूल सिद्धान्त रहा है कि "काल स्वयं ब्रह्म का मूर्त स्वरूप है।"

अथर्ववेद कहता है —

"कालो हि भूतं भव्यम् च सर्वं यद् भूतमश्नुते।[15]"

अर्थात् काल ही भूत, भविष्य और वर्तमान सबको व्यापने वाला है। यह ज्योतिष ही है जो इस काल को मापता, समझता और संस्कार के माध्यम से जीवन में रूपायित करता है।

वेद, स्मृति और पुराणों में बारबार यह उद्घोष मिलता है कि कोई भी कर्म- *उचित समय* में ही सफल होता है। इस दृष्टि से संस्कारों में ज्योतिषीय निर्णय कोई रूढ़िवादी अनिवार्यता नहीं, बल्कि *जीवन की यथार्थ वैज्ञानिक पद्धति* है। ज्योतिष के बिना संस्कार केवल अनुष्ठान हैं; और संस्कारों के बिना ज्योतिष केवल गणना है। दोनों का संगम ही बनाता है। 'विज्ञान-जीवन'

दार्शनिक रूप से देखा जाए तो ज्योतिष मनुष्य को यह बोध कराता है कि

"समय केवल मापन नहीं, साधना है; और संस्कार उस साधना का जीवन में अवतरण।"

विज्ञान के स्तर पर यह सिद्ध है कि प्रत्येक क्रिया का प्रभाव उसके समय, पर्यावरण और मानसिक स्थिति से जुड़ा होता है। संस्कारों में ज्योतिषीय निर्णय इस) 'मानसिकता-समय'temporal psychology) को अनुभवजन्य रूप देते हैं — जिस क्षण व्यक्ति स्वयं को ब्रह्माण्डीय लय के अनुरूप अनुभव करता है, वह क्षण ही बन जाता है। 'शुभ मुहूर्त'

आज आवश्यकता इस बात की है कि *संस्कारों में ज्योतिषीय निर्णयों की व्याख्या तर्क और अनुभव दोनों के संगम से की जाए*। यदि इसे वैज्ञानिक दृष्टि से पुनर्परिभाषित किया जाए, तो यह विषय केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि विश्व के लिए *"time-conscious spirituality"* का मॉडल बन सकता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है —

"संस्कार और ज्योतिष एकदूसरे के पूरक हैं-; एक कर्म की शुद्धि देता है, दूसरा उस कर्म के समय का चयन। संस्कार आत्मा को शुद्ध करते हैं, और ज्योतिष उस आत्मा को काल के प्रवाह में संतुलित रखता है। जब दोनों का संगम होता है, तब मनुष्य केवल कर्मशील नहीं, कालयही भारतीय जीवनदर्शन की — संवेदनशील बन जाता है- सबसे बड़ी देन है।

पादटिपण्णी

1. वैदिक ज्योतिष और संस्कारों पर संकलित अध्ययन: शोध
2. मनुस्मृति, अध्याय 4, श्लोक 230।
3. याज्ञवल्क्य स्मृति, अध्याय 1।
4. Varahamihira, Brihat Samhita, Ch. 2।
5. Sharma, S.K. – Cultural Dimensions of Time in India, IGNCA।
6. छान्दोग्य उपनिषद् 7.26.2।
7. याज्ञवल्क्य स्मृति, कर्माध्याय।
8. पञ्चाङ्गसूत्र-, वेदाङ्ग ज्योतिष।
9. वराहमिहिर – *वृहत्संहिता*, मुहूर्ताध्याय।
10. मनुस्मृति, अध्याय 4, श्लोक 230।
11. DrikPanchang, NASA Ephemeris Data, 2023।
12. SAGE Journals – Psychology of Rituals and Collective Belief Systems।

13. डॉ. सुरेशचन्द्र शास्त्री – ज्योतिष और विज्ञान।

14. TERI Report 2021 – Cultural Astronomy and Environmental Ethics।

15. अथर्ववेद, काण्ड 19, सूक्त 54।

संदर्भ-ग्रन्थ सूची (Bibliography)

- ऋग्वेद संहिता।
- अथर्ववेद संहिता।
- मनुस्मृति – गौतम भाष्य सहित।
- याज्ञवल्क्य स्मृति – भाष्य सहित।
- वराहमिहिर – वृहत्संहिता, चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
- भृगु संहिता (अनुवाद)।
- सूर्यसिद्धांत – चौखम्बा प्रकाशन।
- आर्यभटीयम् – आर्यभट।
- भास्कराचार्य – सिद्धांतशिरोमणि।
- Sharma, S.K. – Cultural Dimensions of Time in India, IGNCA।
- Raman, B.V. – Electional Astrology।
- TERI Report – Cultural Astronomy and Ecology, 2022।
- SAGE Research Papers – Ritual and Psychology।